मन्त्र साधनाओं द्वारा बाधा निवारण संभव है परन्तु फल उस समय ज्यादा होता है जब साधना वही व्यक्ति करे जिसके समक्ष बाधा आ रही है। साधनाओं द्वारा आसमान से धन गिरने जैसा चमत्कार नहीं होता परन्तु कुबेर व लक्ष्मी जैसी साधनाओं से धनागमन के रास्ते में आने वाली रूकावटें दूर हो जाती हैं व धनागमन के मार्ग खुलने लगते हैं। आज भी देवी-देवताओं के प्रत्यक्ष दर्शन संभव हैं।

साधनाओं के लिए जरूरी दिशा निर्देश

०१: एक सक्षम गुरू के शिष्यत्व के साथ-साथ ईष्ट और मन्त्र में पूर्ण श्रद्धा।
०२: मन्त्र के प्रति शुद्ध मन से लगन और समर्पण।
०३: इनका प्रयोग किसी भी अनुचित कार्य के लिए ना करें, क्योंकि गलत इरादे से किए गए किसी भी प्रयोग का फल खराब ही होगा।
०४: आचार, विचार व्यवहार शुद्ध रखें। बेकार की बकवास और प्रलाप ना करें।
०५: किसी पर भी गुस्सा न करें।
०६: किसी भी स्त्री का अपमान न करें।
०७: यथासंभव मौन रहें। इसके लिए साधना स्थल के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ-साथ साधना-स्थल का सामाजिक और पारिवारिक सम्पर्क से दूर होना आवश्यक है।
०८: श्रंगार प्रसाधन व विलासिता का त्याग अति आवश्यक है।
०९: जप और साधना का ढोल न पीटें। इसे यथासंभव गोपनीय रखें।
१०: बेवजह किसी को तकलीफ़ पहुँचाने से संबंधित कोई अनैतिक कार्य न करें। ऐसा करने पर दैवीय प्रकोप होता है जो सात पीढियों तक अपना असर दिखाता है।
११: गुरू और देवताओं का कभी अपमान न करें।
१२: साधनाकाल में ब्रह्मचर्य का सख्ती से पालन करें क्योंकि इससे आंतरिक बल बढ़ता है तथा बजरंग बली और भैरव जैसी उग्र साधनाओं में यही आंतरिक बल ही साधक को जल्द सफलता दिलाता है।
१३: साधना काल में दूध, फल आदि सात्विक भोजन ही ग्रहण करें।
१४: अपनी साधना से संबंधित सामग्री का किसी और को स्पर्श न करने दें।
१५: घर में सुबह-सुबह कुछ देर के लिए भजन अवश्य लगाएँ।
१६: झाड़ू को कभी पैर ना लगाए और ना ही उसे खड़ा करके रखें। इसमें लक्ष्मी का वास होता है। ना ही उसके ऊपर से गुज़रें। अन्यथा घर में बरकत नहीं होती। झाड़ू को हमेशा छुपा कर रखें।
१७: बिस्तर में बैठ कर कभी भी खाना ना खाएँ, ऐसा करने से बुरे सपने और विभिन्न समस्याएँ आती हैं। धन की हानि होती है, घर में अशान्ति फैलती है, और लक्ष्मी रुष्ट होती है।
१८: घर में जूते चप्पल इधर-उधर बिखरे या उल्टे-सीधे ना पड़े रहने दें, इससे घर में अशान्ति उत्पन्न होती है।
१९: पूजा हर सुबह ६ से ८ बजे के बीच पूर्व या उत्तर की और मुँह करके, भूमी पर आसन पर बैठकर करें। पूजा का आसन जूट अथवा कुश का हो तो उत्तम है।

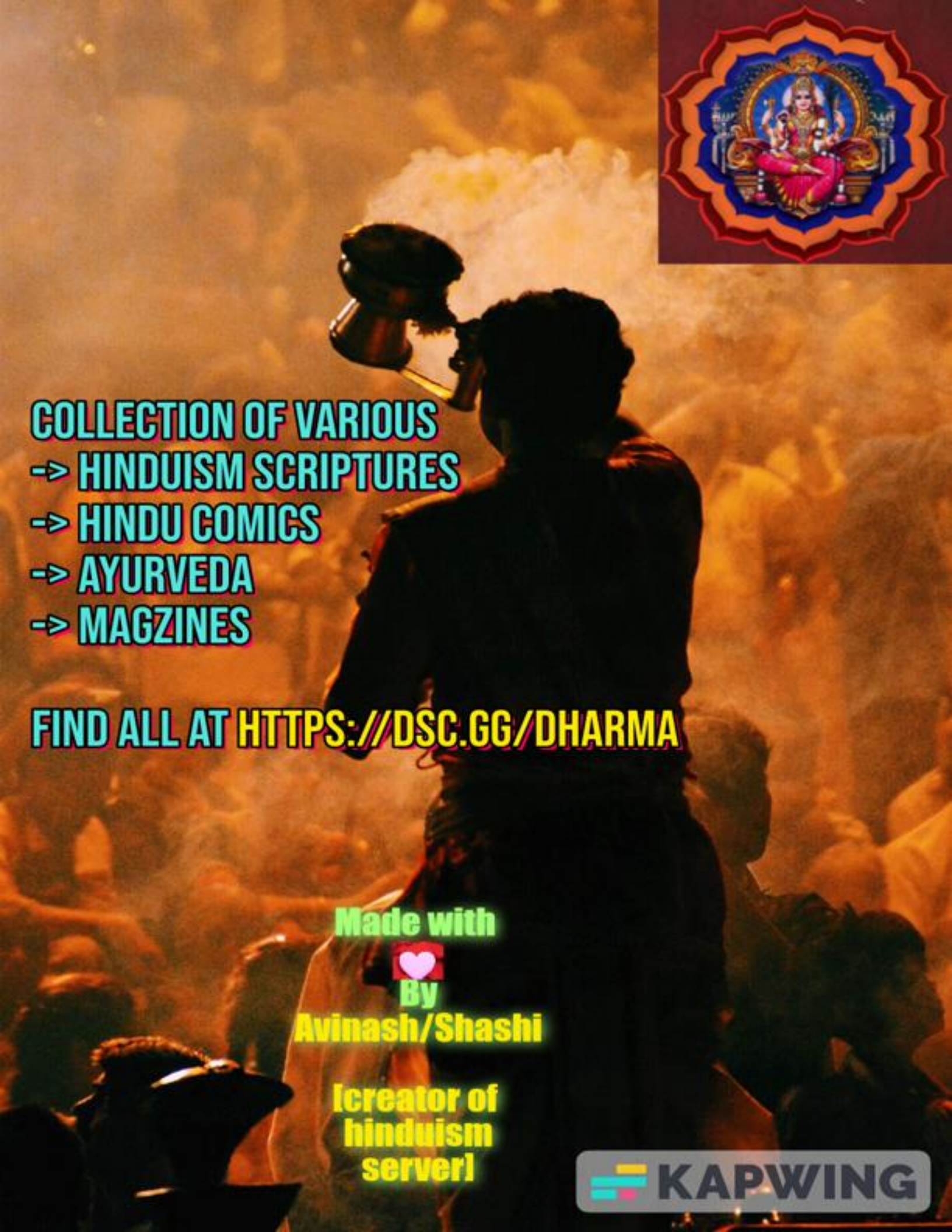
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

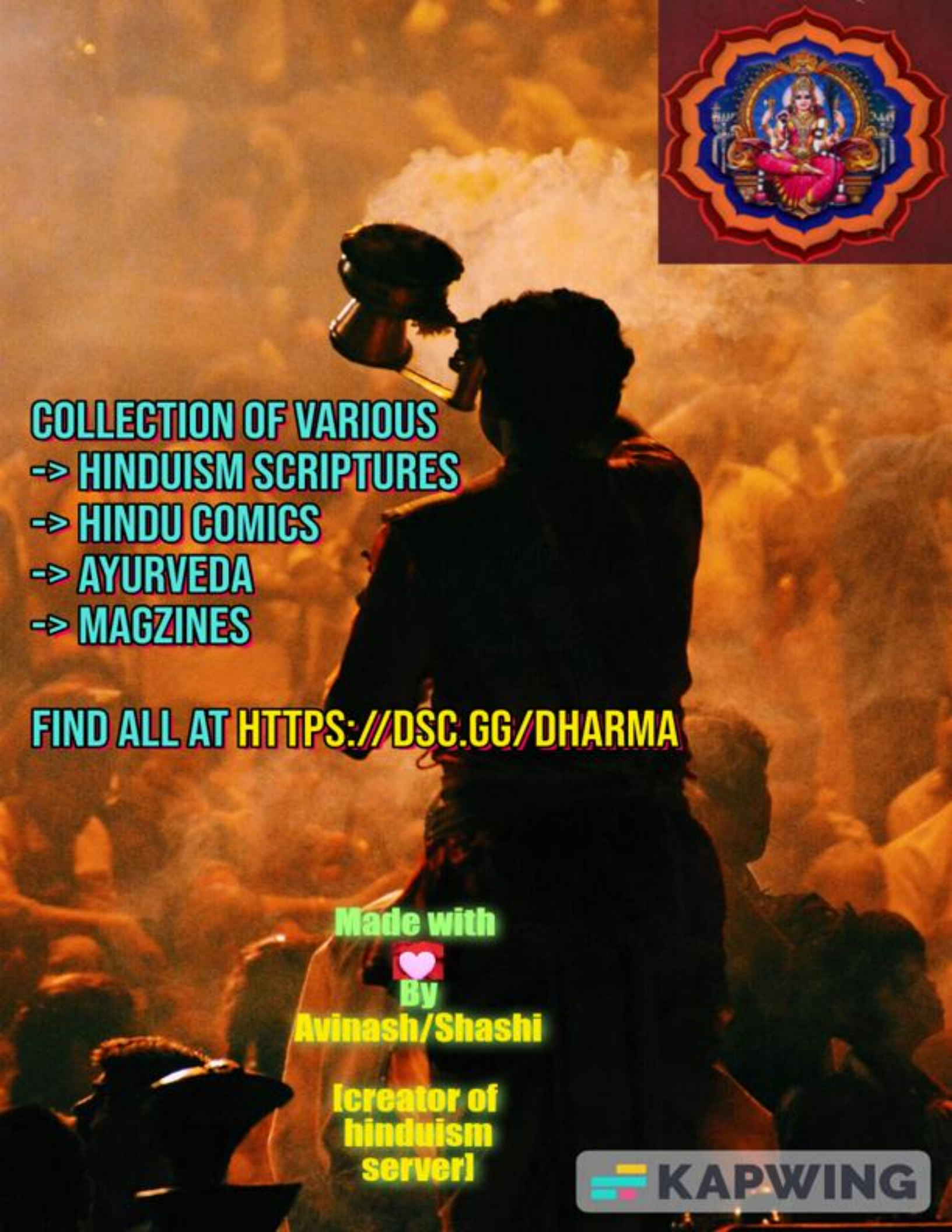
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

पूजास्थल में सदैव जल का एक कलश ईशान कोण के हिस्से में भरकर रखें। धूप, अगरबत्ती व हवन कुण्ड की सामग्री दक्षिण-पूर्व में रखें।

२०: पहली रोटी गाय की अवश्य निकालें। इससे देवता खुश होते हैं और पित्तरों को शान्ति मिलती है।

२१: सप्ताह में एक बार घर में समुद्री नमक अथवा सेंधा नमक से पोंछा अवश्य लगाएँ, इससे घर में उपस्थित नकारात्मक उर्जा दूर होती है।

२२: धूप, पूजा, दीप, अग्नि, आरती जैसे पवित्रता के प्रतीक साधनों को मुंह से फूँक मारकर ना बुझाएँ।

२३: मन्दिर में इस प्रकार की व्यवस्था करें कि सूर्य की किरणें पूजाघर तक अवश्य पहुँचें।

२४: घर के मुख्य द्वार पर दायीं तरफ स्वास्तिक बनाएँ।

२५: घर में कभी जाले ना लगने दें इससे घर में राहू के प्रभाव में वृद्धि होती है। भाग्य व कर्म पर भी जाले लग जाते हैं और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

२६: शाम के समय कभी भी सोना नहीं चाहिये व रात्री में सोने से पहले अपने इष्टदेव का स्मरण अवश्य करें।

२७: घर के मध्य भाग में झूठे बर्तन मॉजने का स्थान कभी ना बनाएं। यह स्थान ब्रह्म का होता है।

२८: घर में सुबह-सुबह कुछ देर के लिए भजन अवश्य लगाएँ।

२९: पूजाघर में यदि कोई प्रतिष्ठित मूर्ती है तो उसकी पूजा हर रोज़ निश्चित रूप से की जानी चाहिये।

प्रत्येक साधनाओं के कुछ नियम होते हैं। शाबर साधनाओं के भी हैं। जिनका पालन किए बगैर साधना में सफलता मिलने संभावना कम होती है। यदि नियमों का पालन किया जाए तो शाबर साधनाएँ जल्द सिद्ध हो जाती हैं। जिस प्रकार वैदिक रीति में करन्यास व अंगन्यास आदि का महत्व है। उसी प्रकार शाबर साधनाओं में आसन जाप और शरीर कीलन का महत्व है। यहाँ सुविधा के लिए आसन जाप की आसान विधी दी जा रही है। किसी भी साधना को करने से पहले इन मन्त्रों का जाप अवश्य करें। यह मन्त्र स्वंय सिद्ध है। इन्हें सिद्ध करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। साथ ही शाबर मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि दी जा रही है। प्रत्येक शाबर मन्त्र के जाप से पूर्व निम्नलिखित विधी करे तो सफलता मिलने हेतु अवश्य ही विधी से मदद मिलती है। इस विधी से नवनाथों की विशेष कृपा प्राप्त होती है और मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं। शाबर मन्त्रों के जनक श्री गोरखनाथ जी और मछन्दरनाथ जी थे। ये मन्त्र संस्कृत में न होकर आम भाषा और उर्दू से मिश्रित होते हैं। इन मन्त्रों को रोजमर्रा के जरूरतों के लिए प्रभावशाली माना गया है। आपको ये अन्धविश्वास और ढकोसला दिखते हैं तो आप सही हो सकते हैं। लेकिन वहीं यदि आपकी श्रद्धा है तो आपको फल अवश्य मिलेगा, क्योंकि जितना मन्त्रों का जाप करने में आप ध्यान और साधना करते हैं, आपका आत्मविश्वास उतना ही बढ़ता जाता है। दिन भर किसी बात की चिन्ता करने से वैसे भी कोई फल नहीं मिलने वाला, यदि आप अपनें मन नियन्त्रण में

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

रखकर अपने उपर भरोसा रखें, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी और जीवन की समस्याओं का समाधान होगा। हम लोगों नें इन मन्त्रों को नहीं बनाया है इसलिए आग्रह किया जाता है कि इनका प्रयोग करने से पहले किसी ज्ञानीजन की मदद अवश्य लें। इनका संग्रह इसलिए किया गया है, क्योंकि ये ऐतिहासिक धरोहर जैसे हैं, और मध्यकाल से प्रचलन में हैं।

मन्त्र जाप और मन्त्र सिद्धि में आसन का अत्यधिक महत्व है। आसन का प्रयोग इसलिए किया जाता है क्योंकि हम जो मन्त्र जाप करते हैं। उस मन्त्र जाप से उत्पन्न होने वाली उर्जा आसन का प्रयोग ना करने के कारण पृथ्वी में समा जाती है और हमें उस मन्त्रजाप का कोई भी फायदा नहीं मिल पाता। अतः किसी भी प्रकार के मन्त्र जाप में आसन का प्रयोग अवश्य करें। यहाँ नाथ पंथ की विधी दी जा रही है।

आसन बिछाते हुए इस मन्त्र का जाप करें और आसन को नमस्कार करें।
ॐ नमों आदेश श्री गुरू जी को,
अन्तर मन्तर ढाई कंकर, जय शिव शंकर।

इसके बाद आसन कीलन मन्त्र का ११ बार जप करते हुए आसन का पूजन करें।
धरती कीलूँ पाताल कीलूँ कीलूँ सातों आसमान,
चौरासी सिद्धों के आदेश से आसन कीलूँ, ना हो अपमान,
लूना चमारिन की आन है, गुरू गोरख की यह शान है।

अब आसन पर बैठकर आसन जाप पढ़ें।
सत नमो आदेश, गुरू जी को आदेश,
ॐ गुरूजी मन मारूँ मैदा करूँ, करूँ चकनाचूर,
पाँच महेश्वर आज्ञा करें, तो बैठूं आसन पूर,
श्री नाथजी गुरू जी को, आदेश आदेश आदेश।

फिर गुरू स्थापना प्रयोग करें और चार मुख वाला दीपक जलाकर निम्न मन्त्र द्वारा गुरू का आह्वान करते हुए इस मन्त्र का सात बार उच्चारण करें।
गुरू दिन गुरू बाती, गुरू सहे सारी राती, वास्तीक दीयना बार के, गुरू के उतारौं आरती।

फिर सर्वार्थ साधना मन्त्र का २१ बार जप करने के बाद ही किसी अन्य मन्त्र कर जप करना चाहिये। सर्वार्थ साधक मन्त्र गुरू मन्त्र की तरह ही कल्पवृक्ष है जो किसी भी शाबर साधना व मन्त्र में सफलता देने हेतु सहायक माना जाता है।

गुरू सठ गुरू सठ गुरू हैं वीर, गुरू साहब सुमरौं बड़ी भाँत,
सिंगी टोरों बन कहौं, मन नाऊँ करतार,
सकल गुरू की हर भजे, घट्टा पाकर उठ जाग,
चेत सम्हार श्री परमहंस।

इसके बाद गणेश जी का ध्यान करते हुए निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का एक माला जप करें।

१ः वक्रतुण्डाय हुँ।
२ः ॐ गं गणपतये नमः।

इसके बाद अष्टगन्ध मिश्रित चावलों को दसों दिशाओं में छिड़कते हुए निम्न मन्त्र से दिशाओं का बन्धन करें।

ॐ वज्र क्रोधाय महादन्ताय दश दिशो बंध बंध हूँ फट् स्वाहा।

अब एक आसन बिछाकर उस पर एक बाजोट रखें। बाजोट के ऊपर एक थाली में नौं पान के पत्ते रखें। पत्तों के ऊपर नौं दीपक तथा बीच में एक गोल पात्र रखें जिसमें धूनी जलाई जा सके। पान के पत्तों के ऊपर एक-एक सुपारी, लौंग, इलायची, पतासे और एक रूपये का सिक्का रखें। दीपक में घी या मीठा तेल डालकर बत्ती लगाएँ व धूप लगा के रखें। बीच में धूनी जलादें और धूनी जलाते वक्त यह मन्त्र पढ़ें।

धूनी धरे, धूआँ करे, तोह नवनाथ पधारे, जो नाथ ना पधारे तोह,
शिव की जटा टूट भूमी में पड़े, आदेश आदेश नव नाथों को आदेश।

अब नवनाथों के निमित्त नौं दीपकों को एक-एक श्लोक पढ़ते हुए एक-एक कर जलाएँ।

१. आदिनाथ आकाश सम, सूक्ष्म रूप ॐकार, तीन लोक में हो रहा, अपनी जय-जयकार।
२. उदयनाथ तुम पार्वती, प्राणनाथ भी आप, धरती रूप सु जानिए, मिटे त्रिबिध भव ताप।
३. सत्यनाथ है सृष्टिपति, जिनका है जलरूप, नमन करत है आपको, स चराचर के भूप।
४. विष्णु तो संतोखनाथ, खांडा खड़ग स्वरूप, राज सम दिव्य तेज है तीन लोक का भूप।
५. शेष रूप है आपका, अचल अचम्भे नाथ, आदिनाथ के आप प्रिय, सदा रहे उन साथ।

६. गज-वली गज के रूप हैं, गण पति कन्थभ नाथ, देवों में हैं अग्रतम, सब ही जोड़ें हाथ।
७. ज्ञान पारखी सिद्ध हैं, चन्द्र चौरंगी नाथ, जिनका वन-पति रूप है, उन्हें नामाऊँ माथ।
८. माया रूपी आप हैं, दादा मछन्द्र-नाथ, रखूं चरण में आपके, करो कृपा मम माथ।
९. शिव-गोरक्ष शिव रूप है, घट-घट जिनका वास, ज्योति रूप में आपने किया योग प्रकाश।

धूनी और दीपकों को प्रज्वलित करने के बाद अब नवनाथ ध्यान मन्त्र से नवनाथ स्वरूप का ध्यान करते हुए उनका आशिर्वाद प्राप्त करें।

आदिनाथ सदा शिव हैं जिनका आकाश रूप, उदयनाथ पार्वती पृथ्वी रूप जानिए,
सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल रूप जानिए, विष्णु संतोषनाथ तिनका रूप मानिए,
अचल है अचम्भेनाथ जिनका है शेषरूप, गजवली कन्थभ नाथ हस्ती रूप मानिए,
जो ज्ञान पारखी सिद्ध है वोह चौरंगी नाथ, अठार भर वनस्पति चन्द्र रूप जानिए,
दादा गुरू श्री मछन्द्रनाथ, जिनका है माया रूप, गुरू श्री गोरक्ष नाथ ज्योति रूप जानिए,
बाल हैं त्रिलोक नव-नाथ को नमन करूँ, नाथ जी ये बाल को अपना ही जानिए।

इसके बाद देह रक्षा मन्त्र को ११ बार पढ़कर अपने शरीर को सुरक्षित कर लेना चाहिये ताकि आपको किसी प्रकार की कोई हानि ना हो। परन्तु इससे पहले किसी भी शनिवार या मण्गलवार के दिन हनुमान विषयक नियमों का पालन करते हुए व्रत रखकर मन्त्र को १००० बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये। तत्पश्चात ७ या ११ बार पढ़कर अपने शरीर पर फूँक मारें या अपने दोनों हाथों को पूरे शरीर पर फेरें या अपने चारों और पानी, गेरू या लोहे की कील से एक घेरा बना लें। इससे आपकी रक्षा होगी और साधना में प्रायः आने वाले विघ्नों व औपरे-पराए से सुरक्षा प्राप्त होगी तथा कोई भी अनचाही शक्ति आपको नुकसान नहीं पहुँचा पाएगी और साधक किसी भी साधना का प्रयोग करने के लिए तैयार हो जाता है।

जीवन मरण है तेरो हात, भैरो वीर तू हो जा मेरे साथ,
रखियो वीर तुम भक्त की लाज, बिगाड़ न पावे कोई मेरो काज,
दुहाई लूना चमारिन की, दुहाई कामाख्या माई की,
दुहाई गौरा पार्वती की, चौरासी सिद्धों को आदेश आदेश आदेश।

फिर अपना इच्छित मन्त्र या आपके द्वारा संकल्प लिए गए मन्त्र का जप निर्धारित संख्या में पूरा करें।

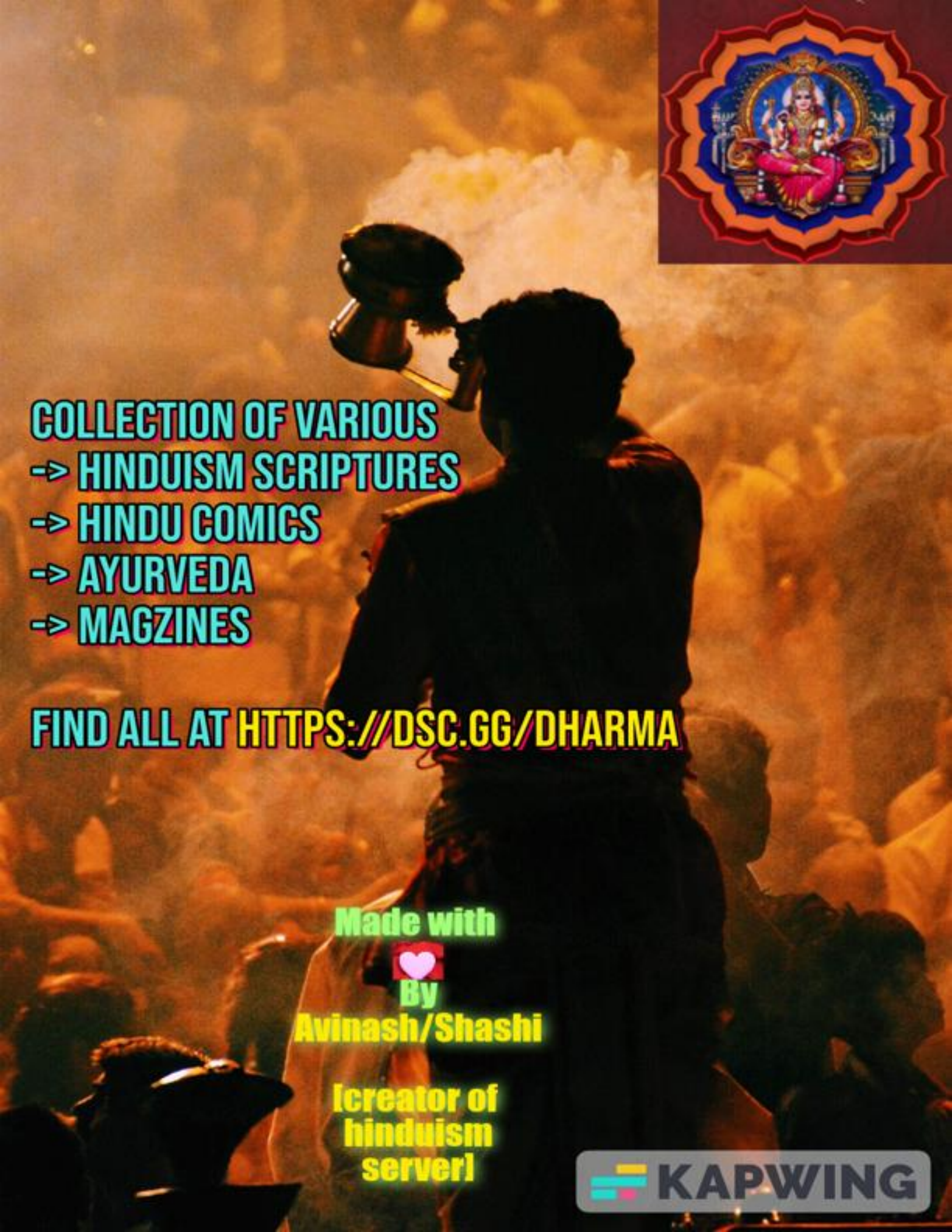
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

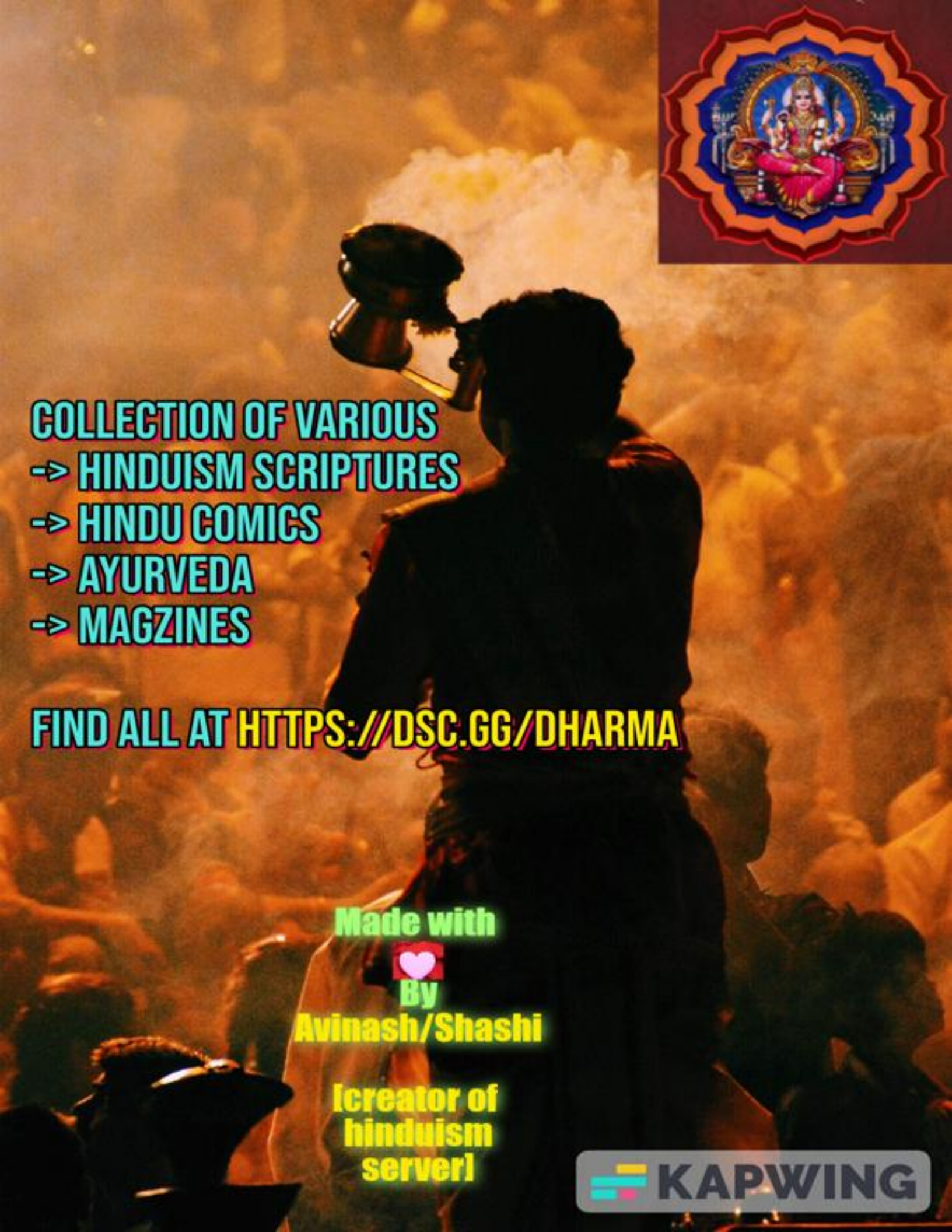
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

उस जाप के पूर्ण होने या पूजा पूरी होने के बाद आसन उठाने के लिए, आसन उठाते हुए इस मन्त्र का जाप करें।

ॐ सत नमो आदेश, गुरूजी को आदेश,
ॐ गुरूजी, ॐ तरो तरो महेश्वर करणी उतारो पार,
संत चले घर अपने, मन्दिर जय-जयकार,
श्री नाथजी गुरूजी को आदेश आदेश आदेश।